20

घर जहां आत्मा वास करता है ...

घर में विश्वास

(गलातियों 5:22, 23)

आसानी से तलाक होने और घरों को टूटने के युग में हम बड़े निराश होकर इन प्रश्नों के उत्तर ढूंढ़ते हैं कि ''मेरा विवाह कैसे टिक सकता है;'' ''मेरा घर खुशहाल कैसे रह सकता है ?''; ''परिवार के सम्बन्ध कैसे मज़बूत हो सकते हैं ?'' इन सब प्रश्नों का उत्तर उन लोगों में पाया जाता है, जो घर में रहते हैं। यदि परिवार के लोग सचमुच में मसीही हैं, अर्थात आत्मा दे रहे हैं, तो घर टिकाऊ, खुशहाल और मज़बूत होगा। ''आत्मा का फल'' क्या है ? पौलुस ने लिखा ''पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम है; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं'' (गलातियों 5:22, 23)।

हमारे पिछले पाठों में दिखाया गया है कि घर खुशहाल हो सकता है यदि हम सचमुच में घर पर आत्मा के फल के विभिन्न पहलुओं को लागू करते हुए सचमुच में मसीही हैं। हम आत्मा के फल की सातवीं खूबी यानी *विश्वास* या *वफ़ादारी* पर आ गए हैं। वफ़ादारी परमेश्वर के समर्थन का आधार है। परमेश्वर को भाने के लिए घर में विश्वास और वफ़ादारी होनी आवश्यक है।

हम इस विचार से परिचित हैं कि विश्वास मसीही जीवन का आधार है। पतरस के यीशु में विश्वास के अंगीकार के बाद, यीशु ने उन से कहा, ''मैं इस चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा'' (मत्ती 16:18)। इसलिए मसीह में विश्वास, कलीसिया की नींव का भाग है। मसीही बनने की पहली शर्त विश्वास है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 8:37; 16:31)। फिर विश्वास की नींव में अन्य सभी मसीही गुण मिला दिए जाते हैं (2 पतरस 1:5-7)। इसी प्रकार हम कह सकते हैं कि वफ़ादारी घर की नींव को बनाती है।

परन्तु हम इससे बढ़कर भी कह सकते हैं। हम यह पुष्टि करने के लिए आगे जा सकते हैं कि वफ़ादारी सचमुच के मसीही घर यानी उस घर की नींव है, जो परमेश्वर को भाता है। किसी परिवार ने बिना परमेश्वर के अस्तित्व को माने या बिना मसीह की उपस्थिति को माने घर में एक सुखद माहौल बनाया हो सकता है। परन्तु बिना वफ़ादारी के किसी घर के लिए ऐसा परिवार होना असम्भव है, जो परमेश्वर को भाता हो और जिसका वह पक्ष लेता हो (देखें इब्रानियों 11:6)।

यह विशेषता क्या है, जिसे KJV में ''विश्वास'' NASB तथा अन्य संस्करणों में ''वफ़ादारी'' बताया गया है। ''विश्वास'' के लिए यूनानी शब्द *pistis* ''यीशु मसीह के विषय में पूर्ण भरोसा, पूर्ण आत्मसमर्पण, पूर्ण विश्वास, पूर्ण आज्ञाकारिता'' के विचार का सुझाव देता है।[1]

इसके अलावा यह शब्द और सम्बन्धित विशेषण *pistis* दूसरों के साथ सम्बन्धों से सम्बन्धित है। उस सम्बन्ध में व्यक्ति-व्यक्ति के बीच सम्बन्ध पर लागू करने पर *pistis* ''वफ़ादारी'' के तुल्य बन जाता है। विलियम बार्कले ने कहा है:

> ... विश्वसनीयता, भरोसेयोग्यता का ही गुण है जो किसी को ऐसा व्यक्ति बनाता है जिस पर हम पूरी तरह से निर्भर हो सकते हैं और जिसकी बात पूरी तरह से स्वीकार्य हो सकती है। ... आम तौर पर यह लगेगा कि इस सब का बेहतरीन अनुवाद *वफ़ादारी* ही है।[2]

तो फिर ''वफ़ादारी'' शायद इस वचन में इस्तेमाल किए शब्द को परिभाषित करने का सबसे अच्छा ढंग है।

यदि घर परमेश्वर को भाता होना चाहता है तो उसमें इन तीन बातों में वफ़ादारी के गुण को सिखाया जाना और और अपनाया जाना आवश्यक है।

ज़िम्मेदारियों को पूरा करने में वफ़ादारी

पहले तो घर के लिए ज़िम्मेदारियों को पूरा करने में वफ़ादारी पर ज़ोर देना आवश्यक है। विशेषण शब्द *pistos* का इस्तेमाल कई बार ज़िम्मेदारियों को निभाने में इस्तेमाल वफ़ादारी के लिए किया जाता है–उदाहरण के लिए, काम पर। वचन दिखाता है कि भण्डारियों को ''भरोसेयोग्य'' होना आवश्यक है (1 कुरिन्थियों 4:2; ''वफ़ादार''; KJV)। भण्डारी को जिसे अपने स्वामी के घर का ज़िम्मा सौंपा गया है ''विश्वासयोग्य'' कहा गया है (मत्ती 24:45; लूका 12:42) और बेहतर काम करने वाले सेवक को ''अच्छा और विश्वासयोग्य'' बताया जाएगा (मत्ती 25:21, 23; देखें लूका 19:17)। इसके अतिरिक्त सुसमाचार की सेवकाई को पूरा करने वालों को ''विश्वासयोग्य'' या वफ़ादार कहा जाता है।[3]

बहुत से कर्मचारी आज इस अर्थ में ''विश्वासयोग्य'' नहीं हैं। कई नियोक्ता इस बात की पुष्टि करते हैं कि कर्मचारियों को जब कोई देख नहीं रहा होता तो काम पर आने के लिए या समय पर पहुंचने के लिए या अपना काम करते रहने के लिए उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

बच्चों को अच्छे कर्मचारी बनने के लिए आवश्यक विश्वासयोग्यता कहां से मिल सकती है! वे उदाहरण से, कायदे से और अनुभव से सीखते हैं। उन्हें छोटी उम्र से ही ज़िम्मेदारियां दिया जाना आवश्यक है और उन ज़िम्मेदारियों को ईमानदारी से पूरा करने की मांग करनी चाहिए।

अपने साथी के प्रति वफ़ादारी

दूसरा, घर को व्यक्ति के जीवन साथी के प्रति वफ़ादारी है। विवाह का आधार एक–दूसरे के साथ वफ़ादारी है। जब कोई पुरुष या स्त्री अपने आपको केवल दूसरे के लिए रखने का वचन देता या देती है, तो वफ़ादारी का वह वचन मरने तक होना चाहिए। यह वचन जीवन साथी के अलावा किसी भी दूसरे के साथ शारीरिक सम्बन्ध रखने से दूर रहने का है। जब पति इस शपथ को तोड़ देते हैं तो हम इसे ''बेवफ़ाई'' कहते हैं जो वफ़ादारी का विपरीत शब्द है।

निकाह के दौरान दूल्हे और दुल्हन द्वारा दिए गए वफ़ादारी के वचन आम तौर पर आज टूट जाते हैं। इक्कीसवीं सदी में कइयों के लिए यह भी हैरानी की बात हो सकती है कि कोई अपने विवाह के साथी के प्रति वफ़दार रहता है। वास्तव में संसार लोगों को कई प्रकार से अनैतिक होने का लालच देता है।

लोग अपने साथी के प्रति बेईमान क्यों होते हैं?

मौन स्वीकृति। हम ऐसे लोगों के बीच में रहते हैं जो व्यभिचार और कुकर्म में लिप्त, जिनके चक्कर हैं और जो अपनी पत्नियों और या अपने पतियों को धोखा देते हैं। सही करने की हमारी इच्छा के बावजूद हम पर दूसरों के जैसे बनने के दबाव से हम प्रलोभन में पड़ सकते हैं। या यूं कहें कि कहीं न कहीं अचेत मन में हम अपने आस-पड़ोस के द्वारा यह सोचने के लिए प्रभावित होते हैं कि व्यभिचार वास्तव मे इतना बुरा नहीं है।

आसान तलाक़ तलाक़! आज कई समाजों में तलाक को शर्म की बात नहीं माना जाता। तलाक यदि ''केवल'' तलाक तक रहता है तो इसे इतनी बड़ी बुराई नहीं माना जाता।

मीडिया का प्रभाव। मनोरंजन उद्योग लगातार ऐसे लोगों को दिखाता रहता है जो बिना किसी बुरे परिणाम को सहे इसमें लगे हैं। ऐसे सम्बन्ध वे तलाक का कारण बनें या न बनें या नये विवाह का कारण हों या न उन्हें आम तौर पर ऐसे सुन्दर, मधुर सम्बन्धों के रूप में दिखाया जाता है, जो विवाह के सम्बन्ध से बढ़कर सन्तुष्टि और आनन्द देते हैं।

भड़काऊ लिबास और व्यवहार। हमारे आस-पास लोग ऐसे लिबास पहनते और काम करते हैं, जो दूसरों को बेवफ़ाई के लिए आकर्षित करते हैं। आधुनिक फैशन शालीनता को बढ़ावा नहीं देता। कई फैशन तो कामुकता से भरे हैं। लोग आम तौर पर उसे पसन्द करते हैं जिससे विपरीत लिंग के लोगों को लुभाया जा सके। इस संसार में रहने वाला व्यक्ति प्रतिदिन पाप के प्रलोभनों का सामना करता है।

लोग अपने साथियों के प्रति वफ़ादार क्यों नहीं होते?

संसार हमें अविश्वास के लिए लुभा रहा है तो हमें अपने साथियों के प्रति वफ़ादार क्यों होना चाहिए।

क्योंकि परमेश्वर इसकी मांग करता है। मसीही लोगों को विवाह में वफ़ादार होना चाहिए क्योंकि परमेश्वर ऐसा चाहता है। इब्रानियों 13:4 कहता है, ''विवाह सब में आदर की बात *समझी जाए,* और *बिछौना* निष्कलंक *रहे*; क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों, पर स्त्रीगामियों का न्याय करेगा।'' जो लोग परमेश्वर को प्रसन्न करने के इच्छुक हैं उनके लिए यही कारण काफ़ी होना चाहिए।

वैवाहिक सम्बन्ध की इच्छा के कारण। मसीही पत्नियों और पतियों के रूप में हमें एक-दूसरे के प्रति वफ़ादार होना आवश्यक है, क्योंकि विवाह में शारीरिक सम्बन्ध पवित्र है क्योंकि यही वह कार्य है जिसमें विवाहित दम्पत्ति सच्चे अर्थ ''एक'' होते हैं (मत्ती 19:5)। यह एक होने का प्रतीक भी है और कारण भी विवाह में शारीरिक सम्बन्ध की पवित्रता के कारण ही यीशु ने व्यभिचार को तलाक का एकमात्र वैध कारण बताया (मत्ती 19:9)।

क्योंकि हम ने वचन दिया। हमें अपने साथियों के प्रति वफ़ादार रहना आवश्यक है, क्योंकि हम ने कहा है कि हम वफ़ादार रहेंगे। यदि हम ईमानदार और भरोसे के योग्य हैं तो हम अपना वायदा नहीं तोड़ेंगे।

परिणामों के कारण। आत्मिकता के अलावा हमें इस जीवन में बेवफ़ाई के परिणामों के कारण अपने साथियों के प्रति वफ़ादार होना आवश्यक है। वे परिणाम क्या हैं?

(1) *बेवफ़ाई के परिणाम।* विवाह के सम्बन्ध में यदि एक जन व्यभिचार करता है तो क्या होगा? दो सम्भावनाएं हैं।

एक सम्भावना है कि किसी को पता चले। बेशक आम तौर पर व्यभिचार का पता चल ही जाता है पर यदि इसका पता नहीं चलता तो भी विवेक की समस्या है व्यभिचार करने वाला या वाली जीवन भर इस दोष की पीड़ा को महसूस करता रहता है या रहती है। किसी दूसरे मानवीय जीवन को इस्तेमाल करने की भी समस्या है, व्यभिचार होने पर न केवल निर्दोष साथी के विरुद्ध ही पाप किया जाता है बल्कि अवैध शारीरिक सम्बन्ध उसमें शामिल दूसरे व्यक्ति के विरुद्ध भी पाप है।

दूसरी सम्भावना है कि *बेवफ़ाई का पता चल जाए*। तो क्या होगा? फिर दो सम्भावनाएं हैं।

हो सकता है कि *तलाक रुक जाए*। पर यदि तलाक न भी हो तो विवाह के सम्बन्ध में एक ऐसा दाग या तनाव लग जाता है जो शायद कभी मिटे न।

एक और सम्भावना है कि *तलाक हो सकता है*। फिर परिवार के एक सदस्य के बेवफ़ाई के एक पल से पूरा परिवार सदा के लिए प्रभावित हो जाता है। यीशु ने तलाक की अनुमति दी, पर उसने इसको बढ़ावा नहीं दिया।

(2) तलाक के परिणाम। इस ''खुले'' युग में भी व्यभिचार को आधिकारिक रूप में कई समाजों में बुरा माना जाता है और अनुसंधान के अनुसार यह विवाह के टूटने का एक बड़ा कारण है। इसलिए यदि विवाह में कोई साथी व्यभिचार करता है तो इसका परिणाम तलाक हो सकता है। बेवफ़ाई के कारण होने वाले तलाक से तलाक लेने वाले दोनों पक्षों के लिए घातक परिणाम हैं–यानी ''दोषी पक्ष'' (बेवफ़ा) जिसने व्यभिचार किया है और ''निर्दोष पक्ष'' (वफ़ादार साथी) के साथ-साथ दूसरे लोग भी प्रभावित होते हैं।

''दोषी पक्ष'' का क्या होगा? इस प्रश्न पर यीशु का कहना स्पष्ट था, पर उसकी शिक्षा कठिन है (देखें मत्ती 19:9)। इसके अलावा छोड़कर जाने वाले साथी को बच्चे की सहायता या गुज़ारा-भत्ता देना पड़ सकता है। यह अतिरिक्त अदायगियां कई सालों तक एक बड़ा वित्तीय बोझ बन सकती हैं, या हो सकता है कि जीवन भर के लिए हों। इसके अलावा माता या पिता विशेष अवसरों को छोड़ प्रिय बच्चों को देखने से वंचित होना पड़ सकता है।

यदि बेवफ़ा पति या पत्नी पुनर्विवाह विवाह कर लें तो? पुरुष उस स्त्री से जिसके साथ उसके सम्बन्ध हों, विवाह करना चुन सकता है, पर क्या ऐसा विवाह जो वासना पर आधारित है सफल हो पाएगा? वह स्त्री विवाहित पुरुष के साथ सम्बन्ध बनाना मान गई तो वह ऐसी स्त्री पर भरोसा कैसे कर सकता है? वह कैसे यकीन कर सकता है कि वह किसी दूसरे के साथ सम्बन्ध नहीं रखेगी? इसी प्रकार स्त्री उस पर कैसे भरोसा रख सकती है? वह अपनी पहली पत्नी के साथ बेईमान था; तो दूसरी पत्नी के साथ ईमानदार कैसे होगा? वह उससे विवाह करे या न, या किसी दूसरे से विवाह कर ले, उसे यह समझना आवश्यक है कि आंकड़े बताते हैं कि दूसरा विवाह (तलाक के बाद) पहले विवाह से *कम* सफ़ल रहता है।

''निर्दोष पक्ष'' क्या करे? जिस व्यक्ति ने व्यभिचार नहीं किया वह अपने आप को दोषी महसूस नहीं करता। वास्तव में कई बार ''निर्दोष पक्ष'' को दोषी महसूस करना चाहिए। उदाहरण के लिए कई मामलों में पत्नी वास्तव में इतनी भोली नहीं होती, पर वह अपने पति को किसी

दूसरी स्त्री की बाहों में धकेलती है। परन्तु यदि वह (पुरुष या स्त्री) बिल्कुल निर्दोष हों तो भी यह सम्भावना है कि पीड़ित पति या पत्नी चकित होंगे कि ''मैंने क्या किया, या मुझ से क्या गलती हो गई, जिससे मेरा पति या पत्नी व्यभिचार में चला गया।'' वास्तव में जब भी कोई विवाह टूटता है तो उसमें शामिल पुरुष या स्त्री को नाकामी का अहसास होता है जैसे वे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सफल न हुए हों।

एक साथी के भोला या निर्दोष होने के बावजूद तलाक से जीवन बेहतर होना आवश्यक नहीं। अर्थात कठिनाइयां हैं ... बच्चों के पालन पोषण की विशेष चुनौतियां हैं, यदि बच्चे हैं ... अविवाहित होने में तालमेल बिठाने में कठिनाइयां ... किसी और साथी को ढूंढ़ने की दुविधा। एक तलाकशुदा व्यक्ति दूसरी बार अच्छे साथी के मिलने के प्रति सुनिश्चित कैसे हो सकता है? तलाक का एक बुरा पहलू यह है कि तलाक से होने वाली समस्याएं आम तौर पर ''निर्दोष पक्ष'' लिए अधिक होती हैं, तौभी हो सकता है कि वे सभी समस्याएं ''दोषी पक्ष'' के कारण आई हों।

निर्दोष दर्शकों का क्या? स्वाभाविक है कि तलाकशुदा दम्पत्ति के बच्चे प्रभावित होते हैं। इसके अलावा तलाक पति और पत्नी दोनों के माता-पिता को प्रभावित करता है। दादा-दादी या नाना-नानी भी हो सकते हैं। कलीसिया और समाज में प्रभावित हो सकते हैं हम सब को परेशानी होती है?

इस अध्ययन का उद्देश्य किसी भी सूरत में तलाक को गलत ठहराना नहीं है न ही यह ''निर्दोष पक्ष'' के तलाक लेने और पुनर्विवाह करने के अधिकार पर सवाल उठाने के लिए है, बल्कि यह तो नास्तिकता के बुरे परिणामों को दिखाने के लिए है। *विवाह की समस्याएं विवाह के साथी की बेवफ़ाई के कारण होती है!* आश्चर्य की बात नहीं कि परमेश्वर ने कहा, ''व्यभिचार न करना'' (निर्गमन 20:14; देखें रामियों 13:9)। यह हमारी ही भलाई के लिए था!

परमेश्वर के साथ वफ़ादारी

तीसरा, घर को परमेश्वर के साथ वफ़ादारी पर ज़ोर देना आवश्यक है। थॉमस बी. वारेन ने कहा है, ''विवाह उन लोगों के लिए है जो परमेश्वर से और एक-दूसरे से प्रेम करते हैं।''[4] घर को परमेश्वर के लिए प्रेम और उसके लिए वफ़ादारी पर ज़ोर देना आवश्यक है। परमेश्वर के लिए वफ़ादारी पर ज़ोर देना विशेष रूप में अपने बच्चों को उनकी ज़िम्मेदारी के सम्बन्ध में माता-पिता के लिए विशेष रूप में आवश्यक है। मसीही माता-पिता की ज़िम्मेदारी है कि वे अपने बच्चों में अपने विश्वास को डालें। कैसे?

सिखाने के द्वारा

मसीही माता-पिता के रूप में अपने बच्चों को सिखाने के समय हमें अपने विश्वास को देना आवश्यक है। हमें उन्हें हर हाल में हर समय सिखाना चाहिए। हमें वैसे ही करना चाहिए जो व्यवस्थाविवरण 6:6, 7 में परमेश्वर ने इस्राएली माता-पिता से चाहा था:

> ये आज्ञाएं जो मैं आज तुझ को सुनाता हूं वे तेरे मन में बनी रहीं; और तू इन्हें अपने बाल बच्चों को समझा कर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना।

सिखाना ठहराए हुए समयों और स्थान पर हो सकता है, पर यह ''मार्ग पर चलते'' भी हो सकता है और होना चाहिए। प्रभावी शिक्षा बिना योजना के कभी भी और किसी भी समय दी जा सकती है। सिखाने के अवसर हर प्रकार की गतिविधि में किसी भी परिस्थिति में हो सकते हैं।

नमूने के द्वारा

मसीही माता-पिता वफ़ादारी को केवल सिखाकर नहीं बल्कि विशेष रूप में उदाहरण के द्वारा डालते हैं। बच्चे उन प्राथमिकताओं से जिन्हें वे दिन प्रतिदिन और सप्ताह दर सप्ताह देखते हैं, अधिक सीखते हैं। उदाहरण के लिए माता-पिता की नज़र में ''विश्वास'' कितना आवश्यक है? छोटे बच्चे भी इस प्रश्न का यह उत्तर देकर बता सकते हैं कि उनके माता-पिता कितनी बार प्रार्थना करते हैं या बाइबल को पढ़ते हैं या वे परिवार के लिए आराधना में समय निकालते हैं या नहीं, माता-पिता उन्हें बड़े होते समय क्या और कैसे प्रोत्साहित करने के ढंग से और अपने जीवनों में कलीसिया को दी जाने वाली प्राथमिकता से। मसीही लोग कलीसिया में मसीह के बिना परमेश्वर के विश्वासी नहीं हो सकते! *यदि हम परिवार में परमेश्वर के प्रति वफ़ादारी को दिखाना चाहते हैं तो हमें चन्दा देने में वफ़ादार होने से आरम्भ करना आवश्यक है।*

सारांश

''विश्वासयोग्य होना'' वफ़ादार होना ही है। घर में हमें उन ज़िम्मेदारियों को पूरा करने में जिन्हें हम स्वीकार करते हैं, वफ़ादार होना, विवाह की अपनी शपथों के प्रति वफ़ादार होना और परमेश्वर के प्रति वफ़ादार होना आवश्यक है। ऐसी वफ़ादारी पर परमेश्वर को भाने वाला घर बन सकता है।

इसके विपरीत, ऐसी वफ़ादारी यानी काम में वफ़ादारी, विवाह में, धर्म में वफ़ादारी के बिना परमेश्वर को प्रसन्न करने का कोई ढंग नहीं है। जो लोग अपने भण्डारीपन में अविश्वासी हैं, अपने विवाह में अविश्वासी हैं और परमेश्वर के प्रति अविश्वासी हैं, उनका उद्धार तब तक नहीं हो सकता जब तक वे मन नहीं फिराते। प्रकाशितवाक्य 21:8 के अनुसार जिन लोगों को स्वर्ग में स्थान नहीं मिलेगा उन में ''अविश्वासी'' (''विश्वासहीन''; RSV) भी हैं इस पाठ में परिवार के लिए इस्तेमाल किए गए हमारे शब्द का विपरीत शब्द है।

परमेश्वर के साथ वफ़ादारी से रहना आरम्भ करने के लिए विश्वास का होना आवश्यक है। यीशु में विश्वास करें। फिर विश्वास करते हुए आपको आज्ञा माननी आवश्यक है।

टिप्पणियां

[1]विलियम बार्कले, *फ्लेश एण्ड स्पिरिट: ऐन इग्ज़ामिनेशन ऑफ़ गलेशियंस 5:19-23* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1962), 107-8. [2]वही, 108. [3]देखें 1 तीमुथियुस 1:12; 2 तीमुथियुय 2:2; 1 कुरिन्थियों 4:17; इफिसियों 6:21; कुलुस्सियों 1:7; 4:9; 1 पतरस 4:12; 3 यूहन्ना 5. (बार्कले, 109-10.) [4]थॉमस बी. वारेन, *मैरिज इज़ फ़ॉर दोज़ हू लव गॉड-एण्ड वन अनदर* (फोर्ट वर्थ, टैक्सस: वारेन पब्लिकेशंस, 1962)।